Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में होम रूल आन्दोलन के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Mr. Lalitmohan*

Lecturer in History, Government Senior Secondary School, Bajana, Khurd, Sonipat

शोध आलेख:- *होमरूल का अर्थ है-गृह शासन या स्वशासन। होमरूल आन्दोलन श्रीमती ऐनी बेसेन्ट तथा बाल गंगाधर तिलक ने आरम्भ किया। बाल गंगाधर तिलक छः वर्ष की सजा काटने के प्श्चात् 16 जून, 1914 को रिहा हुए। उन्होने माण्डले जेल अर्थात् बर्मा में रखा गया थ। जब वे भारत पहुँचे तो उन्हें काफी परिवर्तन देखने को मिला। क्रान्तिकारी नेता अरविन्द घोष ने राजनीति से संन्यास ले लिया और वे पांडिचेरी चले गए। लाला लाजपत राया भी इस समय अमेरिका में थे। कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में विभाजन, स्वदेशी व बहिष्कार आन्दोलन तथा 1909 के अधिनियम अर्थात् मिन्टो मार्ले सुधारों का नरमपंथियों पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी जनता में सहानुभूति समाप्त हो गई। तिलक अब राष्ट्रीय कांग्रेस से समझौता करना चाहते थे। उन्होंने कहा कि, "मैं स्पष्ट तौर पर कहता हूँ कि हम लोग भारत की प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार लाना चाहते हैं, जैसा कि आयरलैण्ड में वहाँ के आन्दोलनकारी माँग कर रहे हैं। अंग्रेजी शासन को उखाड़ फैंकने का हमरा कोई इरादा नहीं है। इस बात को कहने में मुझे कोई हिचक नहीं है कि भारत के विभिन्न भागों में जो हिंसात्मक घटनाएँ हुई है, न केवल मेरी विचारधारा के विपरीत हैं, बल्कि इनके कारण हमारे राजनीतिक विकास की प्रक्रिया भी धीमी हुई हैं।" इसके अतिरिक्त उन्हें ब्रिटिश शासन में भी अपनी निष्ठा प्रदर्शित की और भारतीयों को भी प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों का साथ देने को कहा। इससे उदारवादियों में तिलक के प्रति सहानुभूति हो गई दूसरी और श्रीमती ऐनी बेसेन्ट भी लगातार तिलक पर राष्ट्रीय आन्दोलन पुनः करने का दबाव डाल रही थीं। अतः श्रीमती ऐनी बेसेन्ट और बाल गंगाधर तिलक दोनों ने मिलकर होमरूल आन्दोल चलाने का निर्णय ले लिया।*

मुख्य शब्द:- *विदेश नीति, राजनय, गुटनिरपेक्षता, कश्मीर समस्या, डोकलाम विवाद, संयुक्त राष्ट्र संघ, परमाणु परीक्षण।*

----------X----------

शोध प्रविधि:-

इस शोध पत्र को तैयार करने के लिए आंकड़े/तथ्य द्वितीयक स्त्रोतों से जुटाए गए हैं। इस शोध पत्र में ऐतिहासिक घटनाओं के साथ वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर तर्क प्रस्तुत किए हैं जो शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों तथा ज्ञान से प्राप्त किए है। ऐतिहासिक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

होमरूल आन्दोल की परिस्थितियाँ :-

1. प्रथम विश्व युद्धः-

1914 में प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हो गया। इसका राष्ट्रीय आन्दोलन पर भी बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। युद्ध के दौरान भारतीय नेताओं, जमींदारों, व्यापारियों, उद्योगपतियों आदि ने ब्रिटेश सरकार की खूब सहायता की। विश्वास था कि उनसे खुब सहायता की। भारतीयों का विश्वास था कि उनसे खुश होकर ब्रिटिश सरकार उन्हें स्वराज्य या स्वशासन प्रदान कर देगी। इसलिए 1914 में कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में सरकार की तन-मन-धन से सहायता करने का प्रस्ताव पारित किया। गाँधी जी ने भी लागों को ब्रिटिश सरकार का साथ देने की अपील की। अतः भारतीयों ने अंग्रेजों के लिए खूब धन एकत्र किया। इसके अलावा लगभग 10 लाख भारतीय सैनिक मिó, पूर्वी अफ्रीका, सूडान, फ्रांस, चीन, ईरान आदि देशों में अंगेजों की ओर से लड़ने के एिल गए। अतः अंग्रेजों की जीत में भारतीयों का बहुत बड़ा योगदान रहा। ब्रिटिश प्रधानमंत्री मि. एसक्विथ तथा अनय राजनीतियों ने भी भारतीयों के सहयोग की खूब प्रशंसा की।

www.ignited.in

प्रथम विश्व युद्ध का प्रथम प्रभाव यह पड़ा कि भारतीय स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए लालायित हो उठे। अंग्रेज जर्मनी के विरूद्ध पूरी जी जान से लड़े जिससे भारतीयों को स्वराज्य एवं स्वतन्त्रता के मूल्यों का ज्ञान हुआ। अब वे अंग्रेजों की दासता अधिकारों के प्रति जागरूक हो गए। अंग्रेजों का कहना था कि य युऋ स्वतन्त्रता एवं लोकतंत्र की स्थापना के लिए लड़ रहे हैं। अतः भारतीय भी स्वतन्त्रता एवं स्वराज्य की इच्छा करने लगे डॉ. ईश्वरी प्रसाद के अनुसार, "भारतीयों की यूरोप के रणक्षेत्र में सैनिक सफलताओं, युद्ध के सफल अन्त ओर युद्ध के दौरान समानता तथा आत्निर्णय के अधिकारों की घोषणओं ने भारतीयों में रष्ट्रीय अभिमान की एक नई भावना और सवैधानिक सुधारों की आशा उत्पन्न कर दी।"

प्रथम विश्व युद्ध का एक और प्रभाव यह पड़ा कि भारतीयों ने अब सोचना आरम्भ कर दिया कि वे रणकौशल, शक्ति, एवं शौर्यता में यूरोपियनों से किसी भी तरह से पीछे नहीं हैं। अब वे दासता में रहने को तैयार नहीं थे। नरमपंथी भी अब स्वराज की माँग करने लगे थे। इन परिस्थितियों में बाल गंगाधर तिलक तथा श्रीमी ऐनी बेसेन्ट ने होमरूल आन्दोलन चलाने का निर्णय ले लिया।

2. गरम दल एवं नरम दल के बीच समझौता:-

जैसा कि पीछे वर्णन किया जा चुका है कि 1907 के सूरत अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस गरमदल और नरम दल में बिभाजित हो गई। इसका प्रभाव यह पड़ा कि कांग्रेस की लोकप्रियता कम हो गई। तिलक न 16 जून, 1914 में जेल से रिहा होने के पश्चात् कांग्रेस में दोबारा शामिल होने की इच्छा जाहिर की। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट भी होमरूल आन्दोलन के लिए गरमपथियों का सहयोग आवश्यक मानती थीं। अतः उन्होंने मरमपंथियों को कांग्रेस में शामिल कराने के प्रयास तेज कर दिए। नरमपंथी भी समझौते के पक्ष में थे। ऐनी बेसेन्ट ने कांग्रेस के विधान में कुछ संशोधन के सुझाव दिए। नरमपंथी भी समझौते के पक्ष में थे। ऐसी बेसेन्ट ने कांग्रेस के विधान में कुछ संशोधन के सुझाव दिए जिन्हें गोपाल कृष्ण गोखले में स्वीकार कर लिया। परन्तु फिरोजशाह मेहता गरमपंथियों की कांग्रेस में शामिल करने के विरूद्ध थे। 1914 के कांग्रेस के अधिवेशन के कुछ समय पहले फिरोज शाह की मुत्यु हो गइ। कुछ समय पश्चात् गोखले भी स्वर्ग सिधार गए। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी तथा मदन मोहन मालवीय बहुत वृद्ध हो चुके थे और वे नरम दल का नेतृत्व नहीं सम्भाल पा रहे थे। अतः 1915 के अधिवेशन में कांग्रेस के विधान में परिवर्तन कर दिया गया। इससे तिलक का कांग्रेस में जाने का रास्ता सरल हो गया। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट के प्रयासों में परिवर्तन कर दिया गया। इससे तिलक का कांग्रेस में जने का रास्ता सरल हो गया। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट के प्रयासों से गरमपंथी नेता कांग्रेस में पुनः सम्मिलित हो गए। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने इस अधिवेशन में होमरूल आन्दोलन का प्रस्ताव पारित कराने का भी प्रयास किया, परन्तु मुस्लिम लीग विरोधा के कारण ऐसा सम्भव नहीं हो सका। परन्तु स्थानीय स्तर पर कांग्रेस समितियों को पुनर्जीवित करने तथा प्रचार करने हेतु उनके प्रस्ताव स्वीकार कर लिये गए। इसी समय उन्होनें कांग्रेस के प्रतिनिधियों को साफ शब्दों में बता दिया कि यदि सितम्बर 1916 तक कांग्रेस ने उनके कार्यक्रमों को मान्यता नहीं दी तो वे स्वयं अपना संगठन गठित कर लेंगी।

लखनऊ समझौता:-

1914 में कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के नेताओं ने औपनिवेशिक स्वराज प्राप्त करने के एिल मिल जुल कर कार्य करने का निश्चय किया। कांग्रेस और मुस्लिम लीग को नजदीक लाने में मुहम्मद अली जिन्हा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1915 में मुस्लिम लीग ने अपने अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए राष्ट्रीय कांग्रेस के दो नेताओं को आमन्त्रित किया। इस अधिवेशन में लीग ने एक समिति गठित की जिसको कांग्रेस से सहयोग प्राप्त करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। 1916 के लखनऊ अधिवेशन में दोनों संस्थाओं के लोग शामिल हुए और कांग्रेस-लीग योजना अर्थात, लखनऊ समझौते को मान्यता प्रदान कर दी गई। लखनऊ समझौते की मुख्य शर्ते इस प्रकार थीं-

1. प्रान्तों पर केन्द्रीय नियन्त्रण समाप्त कर दिया गया और उन्हें अधिकाधिक स्वावत्तता प्रदान कर दी गई।

2. प्रान्तीय व्यवस्थापिकाओं में स्थानीय महत्त्व के सभी विषवों पर कानून बनाने का अध्किार प्रदान कर दिया गया। यह भी माँग की गई कि प्रान्तीय कार्यकारिणी के आधे सदस्य व्यवस्थापिका द्वारा निर्वाचित होने चाहिए।

3. केन्द्रीय कार्यकारिणी परिषद् में व्यवस्थापितका द्वारा निधर्वाचित सदस्य होने चाहिएं।

4. मुसलमानों के लिए अलग चुनाव क्षेत्र बनाये जाएं।

5. लखनऊ पैक्ट में तीन साम्प्रदायिक धाराएँ थीं-

   i. मुसलमानों के लिए पृथक चुनाव क्षेत्र की बात मानी गई।

www.ignited.in

ii. अल्पसंख्यकों को विशेष सुविधा प्रदान की गई तथा।

iii. अल्पसंख्यकों को उनसे सम्बन्धित विधेयकों का जो उनके प्रतिकूल थे, निषेध करने का अधिकार दिया गया।

इस समझौते से मुस्लिम लीग व कांग्रेस के बीच एकता स्थापित हो गई। इससे ऐनी बेसेन्ट एवं तिलक को होमरूल की माँग करना सरल हो गया, परन्तु यह समझौता भारत की राजनीति के लिए काफी हानिकारक आरम्भ माना गया। आरम्भ से कांग्रेस द्वारा मुसलमानों के प्रति पुष्टिकरण की नीति का आरम्भ माना गया। आरम्भ से कांग्रेस साम्प्रदायिक चुनाव प्रणाली के विरूद्ध से स्वीकृति देकर इस बात को मान लिया कि मुसलमानों की एक अलग राष्ट्रीय है। इसी समझौते ने भारत विभाजन या पाकिस्तान के निर्माण की नींव रख दी।

होमरूल आन्दोल का प्रारम्भः-

होमरूल आन्दोलन चलाने का क्षेय श्रीमती ऐनी बेसेन्ट और बाल गंगाधर तिलक को जाता है। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट एक आयरिश महिला थीं, जो 1893 में भारत में आकर रहने लगी। वह भारत से बहुत प्रेम करती थीं और उसे अपनी मातृभूमि मानती थीं। थियोसोफिकल आन्दोलन के प्रचार में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी समय आयरलैण्ड में स्वाधीनता प्राप्ति के लिए होमरूल आन्दोलन चला हुआ था। ऐनी बेसेन्ट उस आन्दोलन से बहुत प्रभावित हुई। वे भारतीयों के राजनीति स्तर को ऊँचा उठाना चाहती थीं। उन्होंने इस बात का भी विरोध किया कि भारतीय स्वशासन के योग्य नहीं है। इसका मानना था कि भारतीयों को अतिशीघ्र ही स्वशासन मिल जाना चाहिए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए होमरूल आन्दोलन चलाना चाहती थी। होमरूल के विषय में उन्होंने कहा कि, "राजनीतिक सुधार में हमरा उद्देश्य स्थानीय परिषदों से जिला बोर्डो तथा नागरपालिका बोर्डो और प्रान्तीय विधानसभाओं के द्वारा पूर्ण स्थानीय सरकार का निर्माण करना है। इसके अधिकार स्वयं शासन करने वाले उपनिवेशों की विधानसभाओं से समान होंगे, चाहे उन्हें किसी भी नाम से पुकारा जाए। साम्राज्य की संसद में भी भारत का सीधा प्रतिनिधित्व होगा, जब उस संस्था में साम्राज्य के स्वयं शासन करने वाले राज्य होंगे।"

दिसम्बर, 1915 के कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने तिलक सहित अन्य गरमपंथियों को कांगेस में सम्मिलित करने में सफलता प्राप्त कर ली। इसी समय उन्होनं होमरूल आन्दोलन का प्रस्ताव भी कांगेस से पास करवाना चाहा परन्तु उसे कांग्रेस व मुस्लिम लीग की स्वीकृति प्राप्त नहीं हो सकी। जैसा कि पीछे वर्णन किया जा चुका है ऐसी बेसेन्ट ने अपने प्रस्ताव के साथ यह शर्त रखी की यदि सितम्बर 1916 तक कांग्रेस ने उनके कार्यक्रमों पर अपनी स्वीकृति प्रदान नहीं की तो वे स्वयं अपना संगठन गठित कर लेंगीं।

तिलक जो अब कांग्रेस में पुनः शामिल हो गए थे, अप्रैल 1916 में बेलगाँव में हुए प्रान्तीय सम्मेलन में होमरूल लीग की स्थापना कर दी। इससे श्रीमती एंनी बेसेन्ट व उनके समर्थकों को भी काफी प्रोत्साहन मिला। ऐनी बेसेन्ट के समर्थकों ने सितम्बर से पूर्व ही ऐनी बेसेन्ट से होमरूल ग्रुप की स्थापना करने की अनुमति प्राप्त कर ली। इसी समय जमनादास, द्वाराका दास, शंकर लाल बैंकर और इन्दुलाल यागनिक ने बम्बई से यंग इण्डिया नाम समाचार पत्र और विभिन्न भाषओं में पर्चे निकाल कर होमरूल ग्रुप का प्रचार किया। सितम्बर, 1916 को मद्रास में होरूल लीग की घोषणा कर दी। उन्होंने मि. जोजफ को लीगका अध्यक्ष और श्री एन.सी. केलकर को में नियुक्त किया। तिलक एवं ऐनी बेसेन्ट ने अपनी-अपनी लीग का अध्यक्ष और श्री एन.सी. केलकर को मन्त्री नियुक्त किया। तिलक की लीग के प्रचार के लिए कनार्टक, महाराष्ट्र (बम्बई को छोड़कर), मध्य प्रान्त तथा बरार के क्षेत्र दिए गए जबकि देश के बाकी क्षेत्र को बेसेन्ट की लीग को प्रदान किए गए। प्रो. विपिन समर्थक मुझे पसन्द नहीं करते थे और मेरे कुछ समर्थक उन्हें नापसन्द थे लेकिन मेरे उनके बीच किसी तरह का कोई झगड़ा नहीं हुआ।"

तिलक के प्रयासः-

होमरूल आन्दोलन के प्रचार के लिये तिलक ने पूरे महाराष्ट्रका दौरा किया और उन्होंने जनता को होमरूल के उद्देश्यों के बारे में बताया। उन्होंने धर्म-निरपेक्षता के आधार पर होमरूल का प्रचार किया, उन्होने कहा "अंग्रेज हो या मुसलमान यदि यह इस देश की जनता का हित के लिए पराया नहीं है। इस परायेपन का धर्म या व्यवसाय से कोई रिश्ता नहीं है यह सीधे-साधे हितों से जुड़ा प्रशन है....।" उनके इस तरह के प्रभावशाली भाषणों से प्रभावित होकर हजारों लोग उनकी लीग से जुड़ जाते थे। आर.सी. मजूमदार ने भी लिखा है, "तिलक के मधुर भाषणों और प्रत्यक्ष अपीलों ने उनको लोकप्रिय ही नहीं वरन् जनता का हृदय सम्राट बना दिया। वे लोकमान्य कहलाए और देवता की भाँति उनकी पूजा होने लंगी। वे जहाँ भी गए वहाँ उनका राजकीय सम्मान किया गया। उन्होनं लोगो को देशप्रेम, निडरता और त्याग के गुण ग्रहण करने की अपील की।" तिलक ने होमरूल के प्रचार के लिए 6 मराठी तथा 2 अंग्रेजी भाष में पत्र निकाले। इन पत्रों

www.ignited.in

की 47,000 हजार प्रतियाँ बांटी गईं। बाद में उन्हें गुजराती और कन्नड़ भाषा में भी छपवाया गया। उन्होंने। उन्होंने होमरूल की 6 शाखाएँ अर्थात् मध्य महाराष्ट्र, बम्बई, कर्नाटक और मध्यप्रान्त एक-एक तथा बाद में दो शाखाएँ खोलीं।

ब्रिटिश सरकार ने होमरूल की लोकप्रियता से घबराकर उसे समाप्त करने के प्रयास आरमभ कर दिए 23 जुलाई, 1916 ई. को तिलक के 60वें जन्मदिन के अवसर पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया नोटिस दिया, जिसमें कहा गया कि आपकी गतिविधियों को देखते हुए आप पर क्यों नहीं प्रतिबंध लगा दिया जाए। इसके साथ उन्हें 7,000 रूप्ये का मुचलका का भी भरने को कहा गया। इसका परिणम यह हुआ है होमरूल आन्दोलन अत्यन्त लोकप्रिय हो गया। तिलक पर मुकदमा चलाया गया। तिलक को दोषी करार दे दिया गया। परन्तु वे उच्च न्यायालय में मुकद्दमा जीत गए। इससे उनकी लोकप्रियता और बढ़ गई। तिलक और उनके समर्थकों के प्रयासों से होमरूल आन्दोलन के सदस्यों की संख्या 14,000 तक पहुँच गई।

ऐनी बेसेन्ट के नेतृत्व में होरूल आन्दोलन का विकासः-

ऐनी बेसेन्ट ने भी सितम्बर 1916 में होमरूल लीग का गठन कर आन्दोलन आरम्भ कर दिया। ऐनी बेसेन्ट ने गाँवों से लेकर नगरों तक होमरूल लीग की लगभग 200 शाखाएँ खोली। यद्यपि होमरूल आन्दोलन के कार्यक्रमों की देखभाल के लिए एक कार्यपरिषद् का भी निर्वाचन किया जाता था परन्तु सारा काम ऐनी बेसेन्ट और उनके सहयोगी, बी.पी. वाडिया की देख-देख में सम्पन्न किया जाता था श्रीमती ऐनी बेसेन्ट अपने सदस्यों को निर्देश या तो व्यक्तिगत तौर पर देती थी या उनके न्यू इंडिया समाचार पत्र में छपवाकर दिए जाते थे। उनके लीग के सदस्यों की संख्या 7,00 थी जिनमें जवाहरलाल लेहरू, बी. चक्रवर्ती और जे. बेनर्जी जैसे लोग भी सम्मिलित थे। यद्यपि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की अपेक्षा ऐनी बेसेन्ट की लीग का संगठन कमजोर था। फिर भी उन्होंने होमरूल आन्दोलन को आम जनता में लोकप्रिय बनाने में सफलता प्राप्त की। उनका दूसरा साप्ताहिक पत्र कॉमन वील ने भी होमरूल आन्दोल को लोकप्रिय बनाने में अहम् भूमिका निभाई। ऐनी बेसेन्ट की होमरूल का उद्देश्य गृहशासन प्राप्त करना था। होमरूल की लोकप्रियता के विष्य में विपिन चन्द्र ने लिखा है कि "होमरूल का प्रचार कितना तेज हुआ इसका अन्दाजा इसी तथ्य से लगा सकते हैं कि सितम्बर 1916 तक (ऐनी बेसन्ट की लीग की स्थापना तक) प्रचार फंड से छापे जाने वाले तीन लाख पर्चे बाँटे जा चुके थे। यह 'प्रचार फंड' कुछ महीने पहले ही स्थापित किया गया था। इस परचों में तत्कालीन सरकार का कच्चा चिट्ठा होता था और स्वराज के समर्थन में तकर्म दिए जाते थे। ऐनी बेसेन्ट की लीग की स्थापना के बाद इन परचों की फिर छापा गया। कई क्षेत्रीय भाषओं में भी इनका प्रकाशन हुआ। साथ-साथ जनसभाओं का आयोजन और भाषण का क्रम भी जारी रहा। जब भी किसी मुद्दे को लेकर देशव्यापी प्रतिरोध का आह्वान किया जाता, लीग की सारी शाखाएँ इसका समर्थन करतीं। नवम्बर 1916 में, जब ऐनी बेसेन्ट पर बेरार व मध्य कीं और वायसराय तथा गृह सचिव की विरोध प्रस्ताव भेजे। इसी तरह 1917 में, जब तिलक पर पंजाब और दिल्ली जाने पर प्रतिबंध लगया गया, तो अंरूडेल की अपील पर लीग को तमाम शाखाओं ने इसका डटकर विरोध किया।" श्रीमती ऐनी बेसेन्ट के प्रभाव से एक बड़ी संख्या में स्त्रियाँ भीहोमरूल आन्दोल से जुड़ गईं। "ऐनी बेसेन्ट का कहना था कि, "इन स्त्रियों ने अनुपम वीरता, सहनशीलता और आत्मत्याग का परिचय दिया। हमारी लीग की सर्वश्रेष्ठ भरती भारतीय स्त्रियों की है और मद्रास की स्त्रियों को तो इस बात का गर्व है कि वे जुलूस निकालती हैं जब कि उनके पुरूष सुस्त पड़े होते हैं।" इनके प्रयासों से अनेक नरम दल के नेता भी होमरूल आन्दोलन में सम्मिलित हो गए। गोपाल कृष्ण गोखले की पार्टी 'सर्वेन्ट ऑफ़ इण्डिया सोसाइटी' के सदरूों को होमरूल लीग का सदस्य बनाने को अनुमति नहीं थी। अतः उन्होंने भाषणों और परचों के माध्यम से होमरूल आन्दोल का समर्थन किया।

कांग्रेस व मुस्लिम लीग के बीच लखनऊ समझौताः-

जैसा कि पीछे वर्णन किया जा चुका है कि बाल गंगाधर तिलक को लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में पुनः शामिल कर लिया गया। इसी अधिवेशन में होमरूल लीग के सदस्यों को अपनी शक्ति दिखने का असवर प्राप्त हुआ। अतः वे एक बड़ी संख्या में इस अधिवेशन में भाग लेने के लिए पहुँचें। इसके लिए एक रेलगाड़ी भी आरक्षित कराई गई जिसे 'कांग्रेस स्पेशल या होमरूल स्पेशल रेल का नाम दिया गया। इसीअधिवेशन में लखनऊ समझौता हुआ जिसके परिणामस्वरूप कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के बीच एकता स्थापित हो गई। इस समझौते में तिलक व ऐनी बेसेन्ट ने अहम् भूमिका निभाई। जबकि मदन मोहन मालवीय जैसे नेता इसके विरूद्ध थे। इस समझौते के अनुसार मुस्लिम लीग की अलग से साम्प्रदायिक चुनाव प्रणाली या क्षेत्रों की बात स्वीकार कर ली गइ। लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में सवैधानिक सुधारों की माँग भी की गई। रन्तु ये माँगें लीग के

www.ignited.in

सदसय कांग्रेस की एकता का समाप्त नहीं करना चाहते थे। तिलक ने कांग्रेस के निर्णयों एवं कार्यक्रमों पर गौर करने के लिए एक कार्यकारिणी परिषद् गठित करने का प्रस्ताव पेश किया, जो उदारवादियों के विरोध के कारण पारित नहीं हो सका।

लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन के समाप्त होने के पश्चात् तिलक होमरूल लीग तथा ऐनी बेसेन्ट होमरूल लीग के सदस्यों ने उसी पांडाल में बैठक की। इसमें भी हजारों की संख्या में सदस्यों ने भाग लिया। इस सभा को तिलक तथा ऐनी बेसेन्ट ने सम्बोधित किया जिसमें हिन्दू-मुस्लिम एकता अर्थात लखनऊ समझौते की सराहना की गई।

होमरूल के प्रति सरकार की नीतिः-

जैसे-जैसे होमरूल आन्दोलन लोकप्रिय होता चला गया वैसे-वैसे ही ब्रिटिश सरकार की चिन्ता बढ़ती चली गई। विशेषकर मद्रास सरकार की चिन्ता बढ़ती चली गइ। विशेषकर मद्रास सरकार ने इस आन्दोलन का दमन करने का निर्णय ले लिया। सरकार ने स्कूलों, कॉलेजों काॅलेजों एवं विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों पर आन्दोलन में भाग लेने या राजनीतिक पार्टियों की बैठकों में सम्मिलित होने पर प्रतिबन्ध लगया दिया। होमरूल के नेताओं ने सरकार के इस आदेश का जोरदार विरोध किया। श्रीमति ऐनी बेसेन्ट को भी गिरफ्तार कर लिया गया। इसके अलावा जोर्ज अरूंड, वी.पी. वाडिया सहित अनेक नेताओं को भी जेलों में बन्द कर दिया गया। इन गिरफ्तारियों के विरूद्ध पूरे देश में प्रदर्शन किये गए। सर एस., सुब्रहमण्यम अय्यर ने नाइटहुड की उपाधि त्याग दी। मदन मोहन मालवीय, मुहम्मद, अली जिन्हा, सुरेन्द्र नाय बनर्जी भी होमरूल आन्दोलन में शामिल हो गए। 28 जुलाई, 1917 को तिलक ने सरकार को चेतावनी दी "यदि गिरफ्तार नेताओं को तुरन्तु रिहा नहीं किया गया तो ये शान्तिपूर्ण असहयोग आन्दोलन चलायेंगे।" बरार व मद्रास की समितियाँ तुरन्त आन्दोलन छेड़ना चाहती थीं जबकि अन्य कुछ और दिन इन्तजार के पक्ष में थीं। महात्मा गाँधी ने भी लीग के नेताओं की रिहाई के लिए महत्त्वपुर्ण भूमिका निभाई। उन्होनें भी सत्याग्रह करने का निर्णय लिया। ब्रिटिश सरकार देशव्यापी आन्दोलन को देखकर घबरा गई और उसने समझौतावादी रूख अपनाना आरम्भ कर दिया। 20 अगस्त, 1917 में माण्टेग्यू ने घोषणा की कि, "ब्रिटिश सरकार की नीति, जिससे भारत सरकार पूर्ण रूप से सहमत है, यह है कि प्रशासन के प्रत्येक विभाग में भारतीयों के सहयोग को बढ़ाए तथा स्वशासन करने वाली संस्थाओं का क्रमिक विकास इस दृष्टि से करे कि भारत को ब्रिटिश साम्राज्य का अभिन्न अंग रहते हुए उत्तरदायी शासन की प्रगतिपूर्ण प्राप्ति हो जाए।" इसके पश्चात् सितम्बर 1917 को श्रीमती ऐनी बेसेन्ट को रिहा कर दिया गया। ऐनी बेसन्ट भारत के जन-जन में लोकप्रिय हो गईं। 1917 के कांग्रेस के अधिवेशन में उन्हें अध्यक्ष बना दिया गया। इसके पश्चात् होमरूल आन्दोलन समाप्त हो गया।

होमरूल आन्दोल का महत्त्वः-

भारतीय स्वतन्त्र आन्दोलन के इतिहास में होमरूल आन्दोलन का बहुत महत्त्व है। इस आन्दोलन ने स्वशासन के लिए ऐसा मार्ग तैयार किया जिस पर महात्मा गाँधी जैसे जुझारू नेता मशाल लेकर आगे बढ़े और भारत के स्वतन्त्र कराके पूर्ण स्वराज्य दिलवाया। डॉ. विपिन चन्द्र का मानना है कि इस आन्दोलन में शामिल किया। इस आन्दोलन ने भारतीयों में एकता व भाईचारा स्थापित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब ऐनी बेसेन्ट तथा अन्य की गिरफ्तारियाँ हुईं तो सारे देश में प्रदर्शन हुए और अपने प्रिय नेताओं की रिहाई की माँग की गई। होमरूम आन्दोलन का इंग्लैण्ड और अमेरिका पर भी प्रभाव पड़ा। न्यूयार्क में भी इण्डियन होमरूल लीग की स्थापना की गई भावना उत्पन्न हुई। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने इंग्लैण्ड के मजदुरों को अपने भाषण में सन्देश दिया कि, "हम ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन स्वतन्त्र होने में सहायता कीजिए और हम जन-शक्ति को विश्व शान्ति की स्थापना में लगा देंगे। हमारे लोगों ने आप के स्वतन्त्रता संग्राम में बलिदान दिया है। क्या आप इस बात को सहन कर सकते हैं कि इन शहीदों के बच्चे पराधीनता की बेड़ियों में बँधे रहें।" यही कारण था कि अमेरिका व इंग्लैण्ड के अनेक राजनीतिज्ञों ने भारत की स्वराज्य की माँग का समर्थन किया। इसके अलावा होमरूल आन्दोलन का 1919 से 1947 तक एकछत्र नेतृत्व किया। वह नाम था महात्मा गाँधी जिसने भारत की आजाद में अमूल्य योगदान दिया।और इसने भी 'यंग इण्डिया' नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया। इसके अलावा कृषकों वे मजदूरों में अपने हितों के लिए भी संघर्ष की

निष्कर्षः-

अन्त में कहा जा सकता है कि हामरूल आन्दोलन की स्थापना तिलक व श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने की। इस आन्दोलन ने जहाँ कांग्रेस व मुस्लिम लीग में समझौता कराया वहीं पर पूरे भारत में स्वराज्य की माँग की लहर उत्पन्न कर दी। प्रयासों से ही 20 अगस्त, 1917 को घोषणा करनी पड़ी।

www.ignited.in

सन्दर्भ सूची:

1. रमेश चन्द्र मजूमदार: हिस्ट्री ऑफ़ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 4
2. जोगेशचन्द्र बागल: हिस्ट्री ऑफ़ दी इंडिया एसोसिएशन, कलकत्ता, पृ0 212
3. सुरेन्द्र नाथ बनर्जी: ए नेशन इन मेकिंग, पृ0 190
4. रमेश चन्द्र मजूमदार: हिस्ट्री ऑफ़ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 13
5. रमेशचन्द्र मजूमदार: हिस्ट्री ऑफ़ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, पृ0 25
6. बाल गंगाधर तिलक: स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स (1918), पृ0 37-50
7. एक स्टेप इन दि स्टीमर में अमृत बाजार पत्रिका के संपादक मोती लाल घोष की भूमिका (नेशनल ब्यूरो, बंबई, 1918)
8. वही, पृ0 9

Corresponding Author

Mr. Lalitmohan*

Lecturer in History, Government Senior Secondary School, Bajana, Khurd, Sonipat

www.ignited.in